ISSN 2454-5163

26 जनवरी 2020, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 38, अंक 7, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

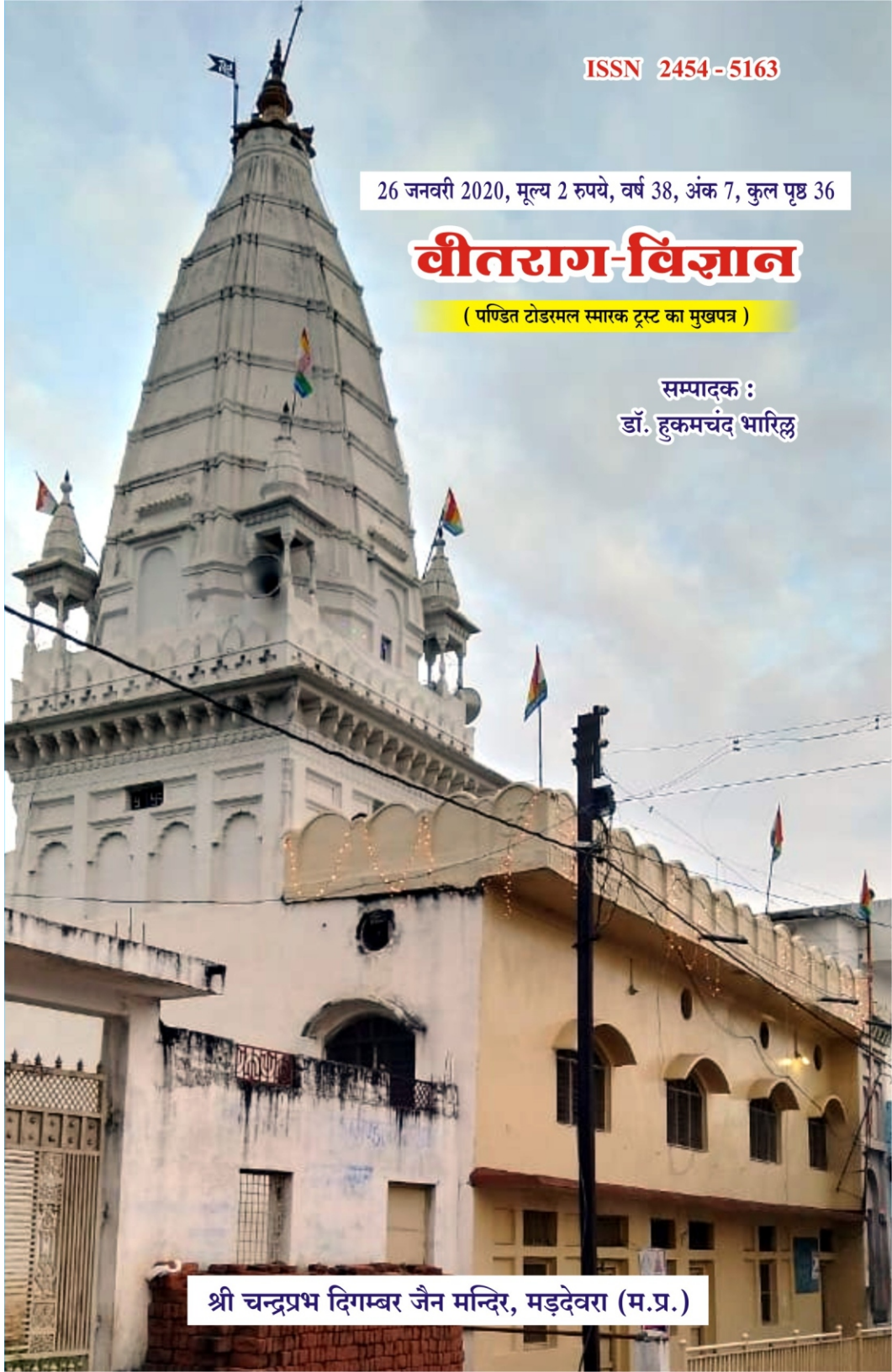

श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर, मड़देवरा (म.प्र.)

वीतराग-विज्ञान (438)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7100
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10100**

स्वयं की प्रभुता

देखो रे देखो ! चैतन्य के निधान देखो! अरे जीवों! तुम्हारे अन्तर के ऐसे चैतन्य निधान बतलाऊँ कि जिन्हें देखते ही अनादिकालीन दीनता दूर हो जाए और आत्मा में अपूर्व आह्लाद जागृत हो.....जिसके सन्मुख दृष्टि करते ही प्रदेश प्रदेश में रोमांच हो जाये कि "अहो! ऐसी मेरी प्रभुता!!" ऐसी अचिन्त्य प्रभुता आत्मा में विद्यमान है। भाई! तेरे आत्मा में ऐसी प्रभुता है कि जगत में अन्य किसी की भी सहायता के बिना स्वत: अकेला ही अपने में से अनंत ज्ञान और आनन्द प्रगट करके तू स्वयं परमात्मा हो जा - ऐसी तेरी शक्ति है।

एक बार तो अंतर में दृष्टि करके अपनी प्रभुता को देख! दृष्टि करते ही निहाल कर दे ऐसा तेरा स्वभाव है। तू अपने स्वभाव की प्रभुता का विश्वास रखकर उसके आधार से शुद्धभावरूप परिणमित होने की क्रिया कर और दूसरा कोई साधन होकर तुझे परिणमित कर देगा ऐसी व्यर्थ की आशा छोड़ दे।

अरे अपनी ही अपने को खबर न हो तो फिर सुखी कैसे होगा? अपने को ही भूलकर बाह्य में भटकता फिरे तो उसे सुख कहाँ से मिलेगा? इसलिए अन्तर में मेरा आत्मा क्या वस्तु है कि जिसमें मेरा सुख भरा है। इसप्रकार अन्तर्शोध करके आत्मा का पता लगाना चाहिए। आत्मा की सत्ता के अतिरिक्त अन्यत्र तो कहीं सुख का अस्तित्व है ही नहीं।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 480

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 38 (वीर नि. संवत् - 2546) 438 अंक : 7

जो-जो देखी वीतराग ने...

जो-जो देखी वीतराग ने, सो-सो होसी वीरा रे।
बिन देख्यो होसी नहिं क्योंही, काहे होत अधीरा रे।।
जो-जो देखी वीतराग ने... ।। 1 ।।

समयो एक बढै नहीं घटसी, जो सुख-दु:ख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे।।
जो-जो देखी वीतराग ने... ।। 2 ।।

लगै न तीन कमान बान कहुँ, मार सकै नहीं मीरा रे।
तू सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनन्त तो तीरा रे।।
जो-जो देखी वीतराग ने... ।। 3 ।।

निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभु को, जो टारे भव भीरा रे।
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारे भव नीरा रे।।
जो-जो देखी वीतराग ने... ।। 4 ।।

– भैया भगवतीदासजी

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 43 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो? यदि हाँ..... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 17 मई से 3 जून 2020 तक चैतन्यधाम (गुज.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

– पण्डित जिनकुमार शास्त्री (उपप्राचार्य)

-: चैतन्यधाम का पता एवं संपर्क सूत्र :-

चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.) 282355; पण्डित सचिन शास्त्री (9924281114), पण्डित मनीष शास्त्री (8087922580) **(चैतन्यधाम अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से 35 किमी. पर है।)**

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

पहला अध्याय

(दोहा)

वीतरागता के धनी, सब जाने अरहंत।
और अनन्तानन्दमय, सभी सिद्ध भगवन्त।। १।।
आचारज उवझाय अर, हैं जितने भी संत।
बंदू बारंबार मैं, आवे भव का अन्त।। २।।
भव-भव में ही भटकते, बीता काल अनन्त।
मन ही मन सोचें भरत, कैसे हो भव अन्त।। ३।।

(रेखता)

इधर आयुधशाला से अभी-अभी आया है इक सन्देश।
हुई है *चक्ररत्न* की प्राप्ति अरे रे सुनो सुनो भरतेश।।
उधर अन्त:पुर से भी मिला अचानक एक सुखद सन्देश।
हुई है *पुत्ररत्न* की प्राप्ति हुआ सबको आनन्द विशेष।। ४ ।।

इसी के बीच एक सन्देश देवतागण भी लाये हैं।
श्री वृषभेश बने *सर्वज्ञ* सभी मन में हरषाये हैं।।
चतुर्दिग छाया है आनन्द अरे आनन्द और आनन्द।
समाया सभी मनों में आज अनन्तानन्द अनन्तानन्द।। ५ ।।

अयोध्या की गलियों में अरे अरे रे जब फैले सन्देश।
हुआ जन-जन को अति आनन्द सभी जन पुलकित हुये विशेष।।
अरे उल्लास भरे अत्यन्त घरों से निकल पड़े सब लोग।
और आपस में करते बात अरे देखो अद्भुत संयोग।। ६ ।।

अरे कुछ समझ नहीं आता करें क्या सोच रहे थे लोग।
अरे इक साथ तीन सौभाग्य फले यह कैसा योगायोग।।
इसी को कहते हैं सब लोग अरे यह महापुण्य का योग।
बहुत कम मिलते ऐसे योग विविधविध सोच रहे थे लोग।। ७।।

भरत ने दिया तभी आदेश चलो जिनवर के वंदन को।
बाद में देखेंगें क्या हुआ चलो पहले जिनदर्शन को।।
अरे जिनदर्शन की महिमा भरत के अन्तर में छाई।
यही कारण है कि यह बात अरे उनके मन में आई।। ८।।

अरे रे पुत्ररत्न की बात अरे रे चक्ररत्न की बात।
नहीं आकर्षित कर पाई किन्तु जिनवर दर्शन की बात।।
प्रथमतः उनके मन आई और उनके चित को भायी।
यही है निर्मलता मन की जो उनके अन्तर में छाई।। ९।।

सुआ-सूतक में तो सब लोग नहीं जाते जिनमन्दिर में।
भरत को क्यों विकल्प आया अरे जिनवर के दर्शन का।।
अरे सामान्यजनों को ही सुआ-सूतक लगते जानो।
सुआ-सूतक लगते हैं नहीं बड़े लोगों को - यह मानो।।१०।।

जिनेन्द्र के दर्शन-पूजन किये विविध विध उत्सव किये अनेक ।
लिया धर्मोपदेश का लाभ जगा अन्तर में भेद-विवेक।।
विविधविध अन्तर में उत्साह हृदय में उमड़ा भक्तिभाव।
और मनमोर नाचने लगा तथा वाणी में प्रगटे भाव।।११।।

अरे वाणी में प्रगटे भाव और वाणी में फूटे बोल।
हृदय में उछले भाव अनन्त अरे भक्ती के भाव अमोल।।
अरे भक्ती के भाव अमोल उन्होंने भक्ती की भरपूर।
अरे आँखों में आया पूर देखने लायक मुख का नूर।।१२।।

अरे कर जोड़ खड़े थे भरत हृदय में उमड़े भाव अनन्त।
उन्हें लख ऐसा जग को लगा आ गया उनके भव का अन्त।।
आ गया उनके भव का अन्त उन्हें आया आनन्द अनन्त।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द उन्हें आया आनन्द अनन्त।।१३।।

भरत को अपने मन ही मन हो रहा था अद्भुत आभास।
और उनके मुखमण्डल पर छा गया अन्तर का उल्लास।।
उल्लसित भक्ति से जब भरत स्वयं की शक्ती लगा अशेष।
ऋषभ के चरणों में हो विनत स्तुति करने लगे विशेष।। १४।।

अरे रे ऋृषभ देव भगवान आपने पाया केवलज्ञान।
किया चारित्रमोह का नाश अरे पाया आनन्द महान।।
आपके बीते रागरु-द्वेष वीतरागी हो गये विशेष।
वीतरागी सर्वज्ञ जिनेश दिया जग को हितकर उपदेश।। १५।।

घातिया कर्म किये चकचूर अरे हो तुम देवों के देव।
अरे अरहंत दशा को प्राप्त आप हो गये जिनेश्वर देव।।
आपकी सेवा में नित रहें उपस्थित अरे हजारों देव।
आपकी महिमा अपरंपार स्वयं में लीन सदा स्वयमेव।।१६।।

अनन्ते गुण राजित जिनदेव विराजे समोशरण के बीच।
आपकी शोभा अपरंपार विराजे शत इन्द्रों के बीच।।
प्रसारित दिव्यध्वनि हो रही हो रहा हितकारी उपदेश।
अरे रे कान लगाकर भव्य सुन रहे परमतत्त्व उपदेश।। १७ ।।

आपने कहा - अनन्तानन्त गुणों का पिण्ड आतमाराम।
न इसकी आदि है न अन्त अनादिनंत आतमाराम।।
शान्ति का सागर सुख का कंद स्वयं में ही पूरण स्वाधीन।
स्वयं से बाहर निकले नहीं स्वयं में ही है अन्तर्लीन।। १८ ।।

स्वयं में अपनेपन के साथ यदि हो अपने में ही लीन।
और अपने में ही जम जाय सहज हो अपने में तल्लीन।।
सहज सुख-शान्ति प्राप्त हो सहज आत्मा अपने में लवलीन।
सहज हो आतम आतमराम मुक्ति पा हो पूरण स्वाधीन।। १९ ।।

आतमा के साधक सब जीव मुक्ति में जाना चाहें सभी।
जिनेश्वर देव आपके भक्त मुक्ति को पाना चाहें अभी।।
अरे मुक्ति में परमानन्द भोगते रहें अनन्ताकाल।
उन्हीं को कहते हैं सब सिद्ध उन्हीं को सदा नवावे भाल।। २० ।।

अरे यह भरत आपका भगत आपके चरणों में रख शीश।
नमन करता है बारंबार प्राप्त करना चाहे आशीष।।
आत्मा में ही मेरा चित्त निरन्तर रमा रहे जिनदेव।
और कुछ नहीं चाहिये मुझे आप तो हैं देवों के देव।। २१ ।।

आपने बतलाया जिनदेव अरे जो जैनधर्म का मर्म।
अरे सौ-सौ इन्द्रों के बीच कहा है अयाचीक[१] जिनधर्म।।
अरे जो होते ज्ञानीजीव जानते हैं वे वस्तुस्वरूप।
नहीं होती भोगों की चाह जानते हैं वे अपना रूप।। २२ ।।

सभी का अपने में अपनत्व सभी का अपने में स्वामित्व।
सभी अपने-अपने कर्त्ता और सब अपने ही भोक्ता।।
किसी का कोई कुछ न करे सभी हैं अपने में स्वाधीन।
किसी से लेना-देना नहीं सभी हैं अपने में लवलीन।। २३ ।।

अरे अपनापन अर ममता और कर्त्ता-भोक्तापन सभी।
सभी कुछ अपने में ही रहे सभी कुछ भिन्न-भिन्न हैं अभी।।
अरे रे एक क्षेत्र में रहें मिलें न कोइ किसी से कभी।
अरे रे यहाँ वहाँ ना कहीं रहें बस अपने में ही सभी।। २४ ।।

१. नहीं माँगने रूप

योगसार अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

योगसार दोहा १७

१५वें-१६वें दोहों में कहा गया है कि पुण्य करने से कुछ नहीं होगा, मुक्ति की प्राप्ति तो एकमात्र आत्मा के जानने से, मानने से, उसमें अपनापन स्थापित करने से ही होगी।

अब इस १७वें दोहे में कह रहे हैं कि यदि परमेष्ठी पद प्राप्त करना है तो एक अपने आत्मा को जानो। मार्गणास्थान-गुणस्थान के भेदों में उलझने से कुछ नहीं होगा।

दोहा मूलतः इसप्रकार है -

मग्गण-गुणठाणइ कहिय, विवहारेण वि दिट्ठि।
णिच्छय-णइँ अप्पा मुणहि, जिम पावहु परमेट्ठि।। १७।।

(हरिगीत)

मार्गणा गुणथान का सब कथन है व्यवहार से।
यदि चाहते परमेष्ठिपद तो आतमा को जान लो।। १७।।

हे योगी! मार्गणास्थान और गुणस्थान आदि का कथन तो व्यवहार दृष्टि से किया गया कथन है। निश्चय दृष्टि से विचार करते हैं तो सार तो यही है कि एक अपने आत्मा को जानो, उसमें ही अपनापन करो और उसका ही ध्यान करो। उससे तुम्हें परमेष्ठी पद की प्राप्ति होगी।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी इस दोहे के भाव को इसप्रकार स्पष्ट करते हैं -

''भगवान सर्वज्ञदेव त्रिलोकीनाथ, परमात्मा; दिव्यध्वनि द्वारा जो बात कहते हैं; वही बात संतों के विकल्पों द्वारा वाणी में आ जाती है। जिनेन्द्र देव ने गुणस्थान और मार्गणा कही है। यह जीव किस गति में है,

किस लेश्या में है, भव्य है कि अभव्य, किस ज्ञान में है इत्यादि, ये सब भेद व्यवहार नय के विषय होने से जानने योग्य तो हैं, किन्तु आदरने योग्य नहीं है। इनके आश्रय से सम्यग्दर्शन नहीं होता।[१]

ये गुणस्थान-मार्गणास्थान वर्तमान पर्याय में अस्तिरूप हैं, परन्तु ये मात्र व्यवहारनय का विषय हैं। निश्चय नय से अर्थात् त्रिकाल अभेद दृष्टि की अपेक्षा ये सब भेद अभूतार्थ, असत्यार्थ कहने में आते हैं।

मैं भव्य हूँ, मति-श्रुतज्ञान, क्षायिक सम्यक्त्व, पाँच इन्द्रिय वाला हूँ - ये सब पर्याय अपेक्षा से सत्य हैं, परन्तु ये भेद स्वभाव में नहीं हैं; इसलिये आश्रय करने लायक नहीं, आश्रय करने लायक तो एकमात्र त्रिकाल अभेद स्वभाव ही है।[२]

अभेद, चिदानन्द आत्मा को जानेगा, उसका आश्रय करेगा तो निश्चय से अरहंत, सिद्ध पद पावेगा। अपने आत्मा को जानने से सिद्ध होगा, व्यवहार को जानने से सिद्ध नहीं होगा।[३]''

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी इस दोहे का भाव स्पष्ट करते हुये लिखते हैं-

''व्यवहारनय पराश्रित है। दूसरे द्रव्य की अपेक्षा से आत्मा को कुछ का कुछ कहनेवाला है। निश्चयनय स्वाश्रित है। वह आत्मा को यथार्थ जैसा का तैसा कहनेवाला है। निश्चयनय से आत्मा स्वयं अरहन्त या सिद्ध परमात्मा है। आत्मा अभेद एक शुद्ध ज्ञायक हैं जैसे सिद्ध भगवान हैं। अपने को शुद्ध निश्चयनय से शुद्धरूप ध्याना ही साक्षात् परमात्मा होने का उपाय है, यही मोक्षमार्ग है; क्योंकि जैसा ध्यावे, वैसा ही हो जावे।[४]''

उक्त कथन का सार मात्र इतना ही है कि द्वादशांग रूप जिनागम में जीवस्थान, गुणस्थान और मार्गणास्थान आदि का कथन बहुत विस्तार से है। वह सभी कथन प्रायः व्यवहारनय से किया गया कथन है, जो

१. योगसार प्रवचन पृष्ठ-२६ २. वही, पृष्ठ-२६-२७
३. वही, पृष्ठ-२७ ४. योगसार टीका, पृष्ठ-७६

जानने योग्य तो है; पर उसी में लगे रहने से कुछ होनेवाला नहीं। पुण्यबंध तो होता है, पर मुक्ति की प्राप्ति नहीं होगी।

इसलिये निश्चयनय से कहे गये आत्मा का स्वरूप जानकर, उसमें अपनापन करो, उसका ही ध्यान धरो।

योगसार दोहा १८-१९

१७वें दोहे में यह कहा था कि यदि परमेष्ठी पद में शामिल होना चाहते हो तो अपने आत्मा को जानो, पहिचानो और उसी में जम जावो।

अब इन १८वें-१९वें दोहों में यह कह रहे हैं कि भले ही घर में रहो, पर हेय-उपादेय को जानते हो, पहिचानते हो और प्रतिदिन जिनदेव का ध्यान करते हो तो शीघ्र निर्वाण को प्राप्त कर सकते हो।

दोहे मूलतः इसप्रकार हैं -

गिहि-वावार-परिट्ठिया, हेयाहेउ मुणंति।
अणुदिणु झायहिं देउ जिणु, लहु णिव्वाणु लहंति॥ १८॥

जिणु सुमिरहु जिणु चिंतवहु, जिणु झायहु सुमणेण।
सो झायंतहँ परम-पउ, लब्भइ एक्क-खणेण॥ १९॥

(हरिगीत)

घर में रहें जो किन्तु हेयाहेय को पहिचानते।
वे शीघ्र पावें मुक्तिपद, जिनदेव को जो ध्यावते॥ १८॥

तुम करो चिन्तन स्मरण अर ध्यान भी जिनदेव का।
बस एक क्षण में परमपद की प्राप्ति हो इस कार्य से॥ १९॥

जो मनुष्य भले ही घर में रहते हों; पर जिन्हें हेय-उपादेय का ज्ञान हो, जो प्रतिदिन जिनदेव का ध्यान करते हों; वे शीघ्र मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

इसलिये हे भाई! जिनेन्द्रदेव का स्मरण करो, चिन्तवन करो और जिनदेव

का ही ध्यान धरो। ऐसा करने से एक क्षण में परमपद की प्राप्ति होती है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी इन दोहों का भाव इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''श्री योगीन्दुदेव कहते हैं कि गृहस्थाश्रम में भी आत्मानुभव हो सकता है। गृहस्थ घर में रहते हुए भी मोक्षमार्ग पर चलते हैं।

मुनिराज उग्र पुरुषार्थ से शीघ्र ही मोक्ष का उत्कृष्ट साधन करते हैं, गृहस्थ सम्यक्दृष्टि अपने योग्य साधन करते हैं, उनका पुरुषार्थ मंद होता है। उनको भी प्रतिक्षण राग का हेयपना ज्ञान में वर्तता है।[१]

वस्तु शुद्ध है और उसका ज्ञान, श्रद्धान, आचरण – ये स्वभाव के साधन भी शुद्ध हैं। ये भी अपने स्वभाव में से आते हैं; कहीं दूर से, राग में से, पर में से नहीं आते। इसलिए गृहस्थाश्रम में मोक्ष का मार्ग प्रारंभ हो सकता है।[२]

दृष्टि में पूर्ण आत्मा का स्वीकार होते ही परमेश्वर का स्वीकार हो गया और हेय ऐसे रागादि का दृष्टि में त्याग हो गया।

ममता के समय में भी समता का पिंड प्रभु कहीं चला नहीं गया है; मात्र समता के पिंड का स्वीकार और ममता को अस्वीकार करें तो गृहस्थाश्रम में भी धर्म हो सकता है।[३]

यदि गृहस्थाश्रम में रहते हुये भी स्व की महिमा आ गई, यह अखण्डानन्द प्रभु ही मेरा विश्राम धाम है, उसका रसास्वादन करना ही मेरा काम है, ऐसी अन्तरदृष्टि हुई; वहाँ ज्ञानी पूजा भक्ति आदि के भावों को भी त्याग बुद्धि से देखता है।[४]

समकिती जिनेन्द्र देव का सदा ध्यान करता है, उसे उस समय भी आत्मा का श्रद्धान-ज्ञान तो निरन्तर वर्तता है, कभी निर्विकल्प ध्यान भी

१. योगसार प्रवचन पृष्ठ-२८ २. वही, पृष्ठ-२९
३. वही, पृष्ठ-३० ४. वही, पृष्ठ-३१

गृहस्थी को होता है।

देह त्याग के समय निर्विकल्प कितने रह सकते हैं? भव के अभाव के समय भव के अभाव स्वरूप भगवान आत्मा में स्थिरता कितनी रह सकती है? उसका प्रयोग करना उसे समाधिमरण कहते हैं।

यह सब गृहस्थाश्रम में हो सकता है।[१]

तू जिनेन्द्र स्वरूपी है – ऐसा श्रद्धान-ज्ञान में ले। ऐसा जिसने श्रद्धान-ज्ञान में लिया वह बारंबार जिनेन्द्र का स्मरण करता है। अर्थात् स्वरूप में बारंबार एकाग्रता करने से उसे मुक्ति प्राप्त होती है। इसलिए यहाँ कहते हैं कि ''जिन सुमरो, जिन चिंतवो, जिन ध्यावो।'' मैं स्वय वीतराग परमात्मा हूँ ऐसा स्मरण कर, चिंतवन कर, इसमें ही एकाग्रता कर।[२] **(क्रमशः)**

१. योगसार प्रवचन पृष्ठ-३२ २. वही, पृष्ठ-३४

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 17 मई से बुधवार, 3 जून 2020 तक

कार्यक्रम स्थल :– चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.)

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

संपर्क सूत्र - ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन - 0141-2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur@yahoo.com**

आवास प्रमुख – पण्डित सचिन शास्त्री (9924281114)
पण्डित मनीष शास्त्री (8087922580)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

छहढाला प्रवचन

अशुचि भावना

पल-रुधिर-राध-मल थैली, कीकस वसादितैं मैली।
नव द्वार बहैं घिनकारी, अस देह करे किम यारी।।८।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

हे भाई! तू अपने महापवित्र और अनन्त गुणों के भण्डार आत्मा से प्रीति कर तो तेरे शर्मजनक जन्म-मरण दूर हो जायेंगे, फिर से माता के पेट में नहीं जाना पड़ेगा। अरे रे ! भगवान आत्मा को ऐसा मलिन शरीर धारण करना पड़े, नौ माह तक माता के गर्भ में मलिन वस्तुओं के बीच में उलटे मुख लटकना पड़े - यह शर्म की बात है। सिद्ध समान भगवान आत्मा को ऐसा गर्भवास शोभा नहीं देता। हे जीव ! यदि तेरा चित्त ऐसे जन्म-मरण से भयभीत हो और तू इससे छूटना चाहता हो तो तू ध्यान द्वारा अपने सिद्ध समान आत्मा को देख।

आत्मा का ध्यान करने की प्रेरणा देते हुए योगीन्दु मुनिराज कहते हैं -

भयभीत है यदि चर्तुगति से त्याग दे परभाव को।
परमातमा का ध्यान कर तो परमसुख को प्राप्त हो।। ५।।
नासाग्र दृष्टिवंत हो देखें अदेही जीव को।
वे जनम धारण ना करें ना पियें जननी-क्षीर को।। ६० ।।

अशरीरी आत्मा को शरीर के साथ जन्म धारण करना शर्मजनक है। देह से भिन्न आत्मा को जानकर अशरीरी सिद्धपद की साधना करने में ही आत्मा की शोभा है।

प्रश्न - मनुष्य देह को तो शुभ भी कहा जाता है न ? श्रीमद्राजचन्द्रजी ने भी लिखा है -

''बहु पुण्य पुंज प्रसंग से शुभ देह मानव का मिला।''

उत्तर - उन्होंने शरीर को शुभ नहीं कहा; परन्तु संज्ञी मनुष्यपना अर्थात् आत्मा को समझने योग्य क्षयोपशम तथा धर्म साधन के अवसर को शुभ कहा है। इस अपेक्षा से मनुष्य अवतार को भी शुभ कहा जाता है।

उक्त पंक्ति के बाद यह भी तो लिखा है, यदि विषयकषायों में ही यह मनुष्यपना गंवा दे तथा आत्मा को भवचक्र से छुड़ाने की दरकार न करें तो इस मनुष्य भव की फूटी-कौड़ी जितनी भी कीमत नहीं है।

मनुष्यपने की दुर्लभता शरीर की महिमा बताने के लिए नहीं कही; परन्तु धर्मसाधना की प्रेरणा देने के लिए कही है कि यह दुर्लभ मनुष्यदेह पाकर इस जीवन को विषय-भोगों में ही मत गंवा देना; परन्तु आत्मा की दरकार करके भव के अन्त का उपाय करना। अत: वास्तव में शरीर की नहीं; अपितु धर्म की दुर्लभता बताई है।

आत्मा है तो शरीर की भी शोभा है, अंदर से आत्मा निकल जाये तो तुरन्त ही शरीर सड़कर गंधाने लगता है। चाहे जैसा रूपवान और युवा शरीर हो; परन्तु यदि ऊपर की पतली चमड़ी निकाल दी जाये तो अंदर इतना घृणास्पद शरीर है कि उसकी ओर देखा भी नहीं जायेगा, जबकि चैतन्यतत्त्व इतना सुन्दर है कि उसे स्वानुभूति द्वारा देखा जाए तो उसमें अपूर्व ज्ञान और आनन्द के फुहारे निकलेंगे। शरीर में तो खून और मांस निकलता है और आत्मा में से ज्ञान और आनन्द निकलता है। ''जो शरीर से सुखी, वह सबमें सुखी'' ऐसा लोक में कहा जाता है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है। तन्दुरुस्त होने पर भी कोई जीव क्रोध, मान आदि से सुलगता हुआ महादुखी होता रहता है। अरे ! देवलोक के जीवों का शरीर कितना सुन्दर और निरोग होता है; परन्तु वे मोह से दुखी होते हैं।

शरीर, जीव को सुखी तो नहीं कर सकता; क्योंकि वह स्वयं जड़ है तो दूसरे को सुखी कैसे करेगा? सुख तो आत्मा में है, इसलिए ''जो आत्मा से सुखी वह सब में सुखी'' यही बात सत्य है; क्योंकि जिसे आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान और अनुभव द्वारा अतीन्द्रिय सुख प्रगट हुआ है, उसे देहादि की प्रतिकूलता भी सुख में बाधक नहीं होती; क्योंकि वह सुख स्वभाव में से आया है, संयोगों के लक्ष्य से नहीं, आत्मा स्वयं ही उस सुखरूप परिणमा है।

अहा ! भगवान आत्मा तो ऐसा महिमावन्त है कि जिसके स्वभाव के स्मरण मात्र से जीव दु:ख को भूल जाये और उसे शान्ति प्राप्त हो, तो फिर उसके साक्षात् अनुभव से उत्पन्न होनेवाले सुख की क्या बात कहें ? सोने की खान खोदने पर सोना निकलता है और लोहे की खान खोदने पर लोहा निकलता है। आत्मा और शरीर भी बिल्कुल अलग-अलग खानें हैं। आत्मा की खान खोदने पर (उसमें एकाग्रता करने पर), सम्यग्दर्शन, ज्ञान, आनन्द आदि पवित्र रत्न निकलते हैं और शरीर की खान में से मलिनता ही निकलती है। शरीर की बात तो स्थूल है, वास्तव में तो क्रोधादि भावरूप आस्रव भी जीव के स्वभाव से भिन्न अशुचि रूप हैं।

समयसार की टीका में आचार्यदेव आत्मा की पवित्रता और आस्रवों की अशुचिता का वर्णन करते हुए लिखते हैं -

१. भगवान आत्मा स्व-पर को चेतनेवाला (जाननेवाला) होने से चेतनस्वभावी है और क्रोधादि आस्रव अपने को और पर को जान नहीं सकते (वे आत्मा द्वारा जाने जाते हैं) इसलिए वे जड़स्वभावी हैं।

२. ज्ञायकस्वभावी भगवान आत्मा का अनुभव अत्यन्त पवित्र है और क्रोधादि आस्रव भावों का अनुभव अत्यन्त मलिन है।

३. भगवान आत्मा स्वयं सदा निराकुल स्वभावी होने से उसका अनुभव

परम आनन्द उत्पन्न करनेवाला है और क्रोधादि आस्रव भाव आकुलता स्वरूप होने से उसका अनुभव दु:ख उत्पन्न करनेवाला है।

देखो ! उक्त तीनों बोलों में आचार्यदेव ने आत्मा को भगवान कहा है। इसप्रकार भगवान आत्मा और क्रोधादि की भिन्नता जानते ही जीव की परिणति अपने पवित्र स्वरूप में तन्मय होकर क्रोधादि अशुचि भावों से छूट जाती है, यही सच्ची अशुचि भावना है और वीतरागतारूप शुचिता प्रगट होना उसका फल है।

अरे जीव ! तू स्वयं ऐसा महान आत्मा है कि दिगम्बर संत भी तुझे भगवान कहकर बुलाते हैं। ऐसे आत्मा की लगनी न करके तू मृतक कलेवर रूप शरीर की लगनी में मोहित हो गया है - यह तुझे शोभा नहीं देता।

अरे भाई! जिसमें अनन्त सुख भरा है, जो सुख स्वरूप है, उसी के लक्ष्य से सुख उत्पन्न होता है; परन्तु जिसमें सुख है ही नहीं - ऐसे शरीर के लक्ष्य से सुख कैसे उत्पन्न होगा? जहाँ सुख नहीं है, वहाँ से सुख लेना चाहे तो मात्र आकुलता अर्थात् दुख ही होगा, तृप्ति नहीं होगी।

धर्मात्मा जीव अपने आत्मा को शरीरादि समस्त पदार्थों से भिन्न जानते हैं, मैं स्वयं अनन्त सुख आदि गुणों की खान हूँ - ऐसा जानकर सदा पवित्र आत्मस्वभाव की भावना करते हैं तथा उसमें लीन होते हैं; अत: उनके सर्वप्रदेशों में आनन्द का झरना झरता है।

शरीर में तो सर्वत्र मलिनता भरी है, नवद्वारों से मैल झरता रहता है। भगवान आत्मा के असंख्यात प्रदेशों में सर्वत्र पवित्रता भरी है और नव क्षायिक लब्धि द्वारा उसके सर्वांग में अनन्त आनन्दरस का झरना झरता है, सर्व प्रदेशों में मात्र शान्ति...शान्ति और शान्ति का अनुभव होता है। शरीर के मैल को छूते ही घृणा और शर्म उत्पन्न होती है, जबकि चैतन्य के निधान पर नजर करते ही जीव निहाल हो जाता है और उसे सम्यग्दर्शन रूपी अपूर्व नजराना मिलता है। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

सम्यक्त्वादि भाव भाने योग्य है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९० पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

मिच्छत्तपहुदिभावा पुव्वं जीवेण भाविया सुइरं।
सम्मत्तपहुदिभावा अभाविया होंति जीवेण।।९०।।

(हरिगीत)

मिथ्यात्व आदिक भाव तो भाये सुचिर इस जीव ने।
सम्यक्त्व आदिक भाव पर भाये नहीं इस जीव ने।।९०।।

मिथ्यात्व आदि भाव तो इस जीव ने बहुत लम्बे काल से भाये हैं; परन्तु सम्यक्त्वादि भावों को कभी नहीं भाया।

(गतांक से आगे....)

(मालिनी)

अथ भवजलराशौ मग्नजीवेन पूर्वं
किमपि वचनमात्रं निर्वृते: कारणं यत्।
तदपि भवभवेषु श्रूयते बाह्यते वा
न च न च बत कष्टं सर्वदा ज्ञानमेकम्।।१२१।।

(हरिगीत)

संसार सागर में मगन इस आत्मघाती जीव ने।
रे मात्र कहने के धर्म की वार्ता भव-भव सुनी।।
धारण किया पर खेद है कि अरे रे इस जीव ने।
ज्ञायकस्वभावी आत्मा की बात भी न कभी सुनी।।१२१।।

जो मोक्ष का कुछ कथनमात्र (-कहने मात्र) कारण है उसे भी (अर्थात् व्यवहार-रत्नत्रय को भी) भवसागर में डूबे हुए जीव ने पहले भवभव में (-अनेक भवों में) सुना है और आचरा (-आचरण में लिया) है; परन्तु अरेरे! खेद है कि जो सर्वदा एक ज्ञान है उसे (अर्थात् जो सदा एक ज्ञानस्वरूप ही है ऐसे परमात्मतत्त्व को) जीव ने सुना-आचरा नहीं है, नहीं है।

सच्चे देव-गुरु की श्रद्धा, पाँच महाव्रत अथवा द्वादश व्रत के परिणाम आदि अनेक प्रकार के व्यवहाररत्नत्रय के परिणाम कथनमात्र मोक्ष के कारण हैं, उन परिणामों से मोक्षदशा प्रकट नहीं होती, उनको मात्र उपचार से मोक्ष का कारण कहा गया है।

यहाँ कोई पूछे कि पंचास्तिकाय की गाथा १७२ में कहा है कि जो भिन्न साध्य-साधन न माने, वह मिथ्यादृष्टि है तो फिर यहाँ उपचार क्यों कहते हो?

समाधान – पंचास्तिकाय में चैतन्यस्वभावी आत्मा साध्य और व्यवहाररत्नत्रय का परिणाम साधन-इसप्रकार भिन्न साध्य-साधन न माने वह निश्चयाभासी है - ऐसा कहा है। साधकदशा में व्यवहार और राग बिल्कुल आता ही नहीं - ऐसा जो जीव मानता है, उसको उद्देश्य करके भूमिका के अनुसार होनेवाले राग का ज्ञान कराया है; परन्तु उसका अर्थ यह नहीं है कि व्यवहार से निश्चय की प्राप्ति होती है।

व्यवहाररत्नत्रय का परिणाम मोक्ष का कथनमात्र कारण है।

परमात्मप्रकाश में अभव्य जीव को व्यवहाररत्नत्रय होता ही नहीं - ऐसा कहा है; क्योंकि जिसके निश्चय नहीं होता, उसके व्यवहार भी नहीं होता - इसप्रकार वस्तुदृष्टि करायी है। जीव ने अनन्तबार शुभभाव किया है; परन्तु उस पर वजन नहीं है, क्योंकि निश्चय प्रगट करने वाले को ही व्यवहारकारण कहा जाता है।

ज्ञानस्वभाव के सागर आत्मा की रुचि छोड़कर पुण्य और निमित्त की रुचि करनेवाला भवसमुद्र में डूबता है।

ऐसे व्यवहाररत्नत्रय के परिणाम को भवसागर में डूबे हुए जीवों ने

पहले अनेक भवों में सुना है और प्रयोग भी किया है। चैतन्यस्वभाव में डुबकी मारने के बदले पुण्य-पाप और देह की क्रिया में डुबकी मारी है। चैतन्यस्वभाव की रुचि छोड़कर पुण्य-पाप की रुचि करके लाभ माना और भवसागर में डूबा। स्वभाव में भव नहीं है। आत्मा ज्ञानस्वभाव का सागर है, उसकी रुचि छोड़कर राग और पुण्य की रुचि करनेवाला जीव स्वभाव-सागर में से बाहर निकला हुआ भवसागर में डूबा है।

एक जीव हजारों रानियाँ छोड़कर नग्न दिगम्बर मुनि हुआ हो, आताप से शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया हो, पाँच महाव्रत निरतिचार पालन करके नववें ग्रैवेयक में गया हो अथवा दूसरा जीव तीव्र पाप करके सातवें नरक गया हो तो भी मिथ्यात्व की अपेक्षा से और भवचक्र की अपेक्षा से दोनों जीव समान ही हैं। निगोद से लगाकर नववें ग्रैवेयक तक के प्रत्येक भव में अज्ञान का सेवन करके मिथ्या-आचरण का ही सेवन किया है।

इस जीव ने व्यवहार चाहिये, निमित्त चाहिये - ऐसी शुभभाव की तथा निमित्त के लक्ष्य की बात अनेक भवों में अनेक बार सुनी है।

यहाँ प्रश्न हो सकता है कि एकेन्द्रियादि तुच्छ भवों में तो सुनने का निमित्त ही नहीं होता तो उत्तर देते हैं कि भले ही बाह्यश्रुत का निमित्त न हो, फिर भी कुश्रुतज्ञान का घोलन करके विपरीत श्रवण प्रतिसमय करता ही रहता है। एकेन्द्रिय में हो अथवा नववें ग्रैवेयक में हो; किन्तु अन्तर्स्वभाव को चूककर राग की रुचि का भाव करनेवाला कुश्रुतज्ञान का श्रवण करता ही रहता है। प्रत्येक भव में चैतन्यस्वभाव से विरुद्ध ही आचरण किया है, इसलिए प्रत्येक भव में सुना है और आचरण किया है - ऐसा कहा है।

मुनि होकर एक-एक वर्ष का उपवास करे, शरीर जर्जर हो जाय, क्रोधादि न करे; तथापि पुण्य से धर्म माननेवाला अज्ञान का ही सेवन करने वाला है। भंग-भेद और पुण्य-पाप की अनेकता की बातें तो अनेक बार की हैं और उनका अनुभव भी किया है; अतः वह कुछ अपूर्व नहीं है।

अहो! ज्ञान ही जिसका सर्वस्व है - ऐसे परमात्मतत्त्व की बात जीव

ने सुनी नहीं और उसका आचरण भी नहीं किया। यह परमात्मतत्त्व ही चैतन्यज्योतिस्वरूप है, ज्ञान ही उसका सर्वस्व है। निमित्त तो स्वभाव के लिए अकिंचित्कर है ही; परन्तु व्यवहार-रत्नत्रय भी स्वभाव के लिए अकिंचित्कर है। देव-शास्त्र-गुरु के सन्मुख होकर शुभ परिणाम किया; किन्तु अरे रे! खेद है कि ज्ञानस्वभावी आत्मा अकेला है और उसके आश्रय से ही मोक्ष होता है - यह बात कभी नहीं सुनी।

शंका - अनन्तभवों में भगवान के समवशरण में गया और वहाँ उनकी वाणी भी सुनी, फिर भी वाणी सुनी नहीं - ऐसा क्यों कहते हो?

समाधान - लक्ष्यपूर्वक सुनने को ही सुनना कहा जाता है। ज्ञानी के पास अनन्तबार गया; परन्तु 'मैं सर्वज्ञस्वभावी आनन्दकन्द हूँ'- ऐसे स्वलक्ष्य के बिना सुनना कार्यकारी नहीं हुआ। एक बार भी स्वलक्ष्य से सुना होता तो मुक्ति हुये बिना नहीं रहती। जैसा ज्ञानी कहे वैसी यथार्थ श्रद्धा करे तो वह निमित्त कहा जाय और तब ही उपादान-निमित्त की सन्धि मिली - ऐसा कहा जाय। **(क्रमशः)**

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

आठवाँ वार्षिक महोत्सव

(शुक्रवार, दिनांक 28 फरवरी से रविवार 1 मार्च, 2020 तक)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में आयोजित **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आठवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 1 मार्च 2020 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

सुख शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

अरे! ज्ञानी जहाँ से, जिन भोग-सामग्री आदि से विरक्त होते हैं, अज्ञानी वहीं, उसी में सुख-चैन के लिए झपट्टा मारता है। अज्ञानी स्त्री, परिजन, धन, मकान इत्यादि में सुख मानकर उसी में रम जाता है; जबकि सुख उनमें है ही नहीं, सुख तो अपने में ही भरा है; परन्तु इस बात की तो उसे खबर नहीं है; इसलिए बाहर में भटकता है और सदा दुःखी ही बना रहता है।

प्रश्न – कभी-कभी तो संयोगों में सुख दिखाई देता है ?

उत्तर – नहीं, कोई भी, कभी भी संयोगों में सुखी नहीं होता; क्योंकि संयोगों में सुख तो दूर, सुख की गंध भी नहीं है। उल्टा संयोगों की ओर झुकाव होने से महापाप और दुःख ही होता है।

भाई! सुख तो उसे कहते हैं जिसमें आकुलता का अंश भी न हो, वह कभी नष्ट भी न हो और कभी बदले भी नहीं।

गजकुमार मुनि की बात शास्त्र में आती है कि जब श्रीकृष्ण श्रीनेमिनाथ भगवान के दर्शन करने हाथी पर बैठकर समवशरण जा रहे थे, तब उनके साथ उनके छोटे भाई गजकुमार भी जाते हैं।

मार्ग में एक सुनार की अतिसुन्दर कन्या सुवर्ण के गिल्ली-डंडों से खेलती हुई दिखाई दी, उसे देखकर श्रीकृष्ण ने सेवकों को आज्ञा दी कि

'इस कन्या को अन्तःपुर में ले जाओ, इसका विवाह गजकुमार के साथ करना है 'सेवक कन्या को अन्तःपुर में ले गये और यहाँ श्रीकृष्ण गजकुमार के साथ भगवान के दर्शनार्थ समवशरण में गये।

भगवान की 'ऊँ ध्वनि' सुनते ही गजकुमार का चित्त अति दृढ़वैराग्य से भर गया। वे बोले - 'हे नाथ! मैं तो मुनिपना अंगीकार करना चाहता हूँ।' तथा बाद में माता देवकी के पास जाकर कहने लगे कि हे माता! जो अन्दर आनन्द का नाथ विराजता है, मैं उसकी साज-संभाल के लिए भगवती दीक्षा अंगीकार करना चाहता हूँ।

अब मैं स्वरूप की सम्हाल (रमणता) के लिए वन में जाता हूँ। हे माता! इस शरीर का ममत्व छोड़ो। मेरी पर्याय में अभी थोड़े दुःख हैं, परन्तु मेरी आनन्दपरिणति में तो उस दुःख का भी अभाव है।

गजकुमार दीक्षित होकर द्वारिका के श्मशान में ध्यान करने चले गये। उनका शरीर हाथी के तालू जैसा कोमल था। इसलिए उनका नाम गजकुमार था। अहा! मुनिराज तो निजानन्दस्वरूप आत्मा के ध्यान में तल्लीन थे, तभी क्रोधाग्नि से जलते हुए उस सुनारकन्या का पिता वहाँ आया और उसने श्मशान की राख, मिट्टी, पानी से सिगड़ी बनाकर रख दी तथा गजकुमार मुनिराज के सिर पर उसने श्मशान के धधकते अंगारे भर दिये, जिससे मुनिराज गजकुमार का सिर बुरी तरह जलने लगा; परन्तु मुनिराज ध्यान में अचल रहे।

अहा! एक ओर धधकती अग्नि से सिर जल रहा था और दूसरी ओर मुनिराज को प्रगट हुई ध्यानाग्नि में कर्म जल रहे थे। सिर के जलने की ओर तो मुनिराज का उपयोग ही नहीं गया। वे तो ध्यानाग्नि प्रज्वलित कर रहे थे। बस, फिर क्या था कुछ ही क्षणों में अन्तर में ध्यानाग्नि में सर्वकर्म जलकर भस्मीभूत हुए।

मुनिराज को तत्काल केवलज्ञान प्रगट हो गया। उन्होंने परमसुखस्वरूप मोक्षपद को पा लिया। अहा! स्वरूपध्यान की/स्वानुभूति की कोई अचिन्त्य महिमा है और इसका फल भी परमसुख-धाम है, मोक्ष है।

समयसार की आत्मख्याति टीका के मंगलाचरण में प्रथम ही आचार्य श्री अमृतचन्द्रस्वामी कहते हैं -

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते।
चित्स्वभावाय भावाय सर्वभावान्तरच्छिदे॥

आहाहा....! कहते हैं कि 'नमः समयसाराय' अर्थात् रागरहित ज्ञान और आनन्द से भरा जो मेरा स्वरूप है, मैं उसे नमन करता हूँ। अहा! मेरा नाथ समयसार आनन्द का सागर है, उसमें मैं मेरी परिणति को झुकाकर नमन करता हूँ।

कैसा है समयसार? 'स्वानुभूत्या चकासते' अर्थात् वह आनन्द का नाथ स्वानुभवप्रत्यक्ष है, निज स्वानुभूति से प्रगट है। वह दया-दान आदि व्यावहारिक भावों से प्रगट नहीं होता।

और कैसा है? कि 'चित्स्वभावाय भावाय' अर्थात् ज्ञान-दर्शन चैतन्य-स्वभावमय है, सत्तास्वरूप है। ज्ञानादिस्वरूप उसका स्वभाव स्वानुभूति में प्रसिद्ध होता है। 'सर्वभावान्तरच्छिदे' अर्थात् तीन काल और तीन लोक के समस्त पदार्थों को एक समय में पूर्ण प्रत्यक्ष जाने, ऐसा इसका सर्वज्ञ-स्वभाव है। अहा! यह सर्वज्ञत्वशक्ति ज्ञानशक्ति में गर्भित है। ऐसा सर्वज्ञस्वभाव स्वानुभूतिपूर्वक जाना जाता है।

कितने ही लोग कहते हैं कि यह तो बहुत सूक्ष्म है; परन्तु क्या करें भाई! तेरा स्वरूप ही सूक्ष्म है। सूक्ष्मत्वगुण द्रव्य में व्यापक होने से ज्ञान, दर्शन, आनन्द, कर्ता-कर्म आदि सभी गुण सूक्ष्म हैं। ऐसे सूक्ष्मत्व को प्राप्त करने का मार्ग भी सूक्ष्म है।

भाई! पुण्य-पाप के स्थूलभावों से यह सूक्ष्म आत्मा नहीं जाना जाता। ऐसा कहकर व्यवहार का निषेध किया। श्लोक के चारों चरणों में अस्ति से बात कही है। अतः पुण्य-पाप एवं अजीवादि आत्मा में नहीं हैं - ऐसी नास्ति अपने-आप ही सिद्ध हो जाती है।

देखो! शत्रुंजय पहाड़ पर पाँचों पाण्डव मुनिदशा में विचरते थे। भगवान के दर्शन के भाव हुए कि इतने में खबर पड़ी कि भगवान नेमिनाथ तो मोक्ष पधार गये, भरतक्षेत्र में भगवान का विरह हो गया। तब पाँचों ही मुनिवर एक-एक माह का उपवास कर ध्यान में खड़े हो गये।

मुनिवरों को पहाड़ के शिखर पर ध्यानमग्न खड़े देखकर दुर्योधन के भानजे ने आकर उपसर्ग किया। जलते हुए लोहे के गहने उन्हें पहना दिये। सिर में धधकते मुकुट, गले में धधकती माला और हाथ-पैरों में धधकते कड़े पहनाकर उसने महामुनिवरों पर भयंकर उपसर्ग किया।

युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम इन तीनों मुनिवरों ने तो वहीं शुक्लध्यान की श्रेणी मांड़कर केवलज्ञान प्रगट करके मोक्षपद प्राप्त किया तथा नकुल और सहदेव को यह विकल्प आ गया कि अरे! एक धर्मात्माओं के ऊपर कैसा उपसर्ग किया? इतने से विकल्प के फल में वे ३३ सागरोपम की आयुवाली सर्वार्थसिद्धि में गये।

देखो! शुभविकल्प के फल में संसार है। अज्ञानी जीव शुभभाव से लाभ/धर्म मानते हैं; परन्तु यह तो उनका भ्रम है; क्योंकि शुभभाव भी बंध का ही कारण है, अबंध का नहीं।

अरे भाई! तेरे स्वभाव में तो अकेला सुख, सुख बस सुख ही भरा है। आहाहा.....! वीणा के तार छूते ही जैसे वीणा झनझनाहट कर बज उठती है, वैसे ही सुखशक्ति से भरे आत्मा में एकाग्र होते ही झनझनाहट करती सुखशक्ति की संवेदनदशा प्रगट होती है। (शेष पृष्ठ 27 पर ...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : जो मुनि आहारक शरीर प्रकृति बाँधे, उसके वह उदय में आवे ही आवे - ऐसा कोई नियम है ?

उत्तर : नहीं, कोई आहारक शरीर नामकर्म बाँधे; परन्तु उसके उदय का अर्थात् आहारक शरीर की रचना का प्रसंग कभी भी न आवे, बीच में ही उस प्रकृति का छेद करके मोक्ष प्राप्त कर ले; परन्तु तीर्थंकर नामकर्म में ऐसा नहीं बनता, वह तो जिसके बँधता है, उसके नियम से उदय होता है। आहारक शरीर की प्रकृति सातवें या आठवें गुणस्थान में बँधती है; किन्तु उदय छठे गुणस्थान में होता है। कोई जीव क्षपक श्रेणी माँडते समय आहारक शरीर प्रकृति बाँधे और सीधा केवलज्ञान प्राप्त कर ले तो उसके छठे गुणस्थान में वापस गिरने का और आहारक शरीर की रचना का प्रसंग ही नहीं बनेगा। छठे गुणस्थान में आहारक शरीर की रचनावाले मुनिवर एक साथ अधिक से अधिक 54 ही होते हैं ।

प्रश्न : ग्यारह अंगधारी द्रव्यलिगीं मुनि की क्या भूल रह जाती है ?

उत्तर : वह स्वसन्मुख दृष्टि नहीं करता, अतीन्द्रिय प्रभु के सन्मुख दृष्टि नहीं करता।

प्रश्न : क्या द्रव्यलिंगी मुनि स्वसन्मुखता का प्रयत्न करता ही नहीं?

उत्तर : नहीं, उसके धारणा में सब बातें आती हैं; किन्तु अन्तर्मुख प्रयत्न नहीं हो पाता।

प्रश्न : द्रव्यलिंगी की भूमिका की अपेक्षा सम्यक्त्वसन्मुख की भूमिका कुछ ठीक है क्या ?

उत्तर : हाँ, द्रव्यलिंगी तो सन्तोषित हो गया और सम्यक्त्वसन्मुखता वाला तो प्रयत्न करता है।

प्रश्न : मुनि को आहार की वृत्ति उठने पर भी मुनिदशा रहती है तो फिर वस्त्र रखने की वृत्ति उठे तो उसमें क्या दोष है ?

उत्तर : मुनि को संयम के हेतु शरीर के निभाव के लिए आहार की वृत्ति उठती है और वस्त्र रखने का भाव तो शरीर से ममत्व का प्रतीक है; अत: वस्त्र रखने की वृत्ति रहते हुए मुनिदशा नहीं रहती।

प्रश्न : क्या द्रव्यलिंगी शुद्धात्मा का चिन्तवन नहीं करता ?

उत्तर : शुद्धात्मा का चिन्तवन तो करता है; परन्तु आत्ममय होकर नहीं करता- ऐसा जानना।

(पृष्ठ 25 का शेष ...)

अरे! इस अज्ञानी को निजस्वभाव की महिमा नहीं है। अतः अनन्तगुण से भरे निजस्वभाव की संभाल करे बिना ये परपद में ही निजपद मानकर भवसागर में गोते खा रहा है। इसकी दुर्दशा की क्या बात। दारुण दुःख से भरी इसकी कथनी कौन कर सकता है?

अरे भाई! यहाँ आचार्यदेव तेरे सुख का निधान बताते हैं, तो अब एकबार निज निधान पर नजर तो कर। अहा! नजर करते ही निहाल हो जाये - ऐसा तेरा निजनिधान है।

जो दुःख को हरे और सुख को करे वही हरि है।

पंचाध्यायी में आता है कि '**हरति इति हरिः**' दुःख के बीजभूत जो मिथ्यात्वादि को हरे उसका नाम हरि है, वह सुखनिधान आनन्दस्वरूप भगवान आत्मा है। प्रमाद छोड़कर, विषयों की प्रीति का झुकाव छोड़कर अपने हरि अर्थात् भगवान आत्मा में एकाग्र होकर निरखना, भजना यही सुखप्राप्ति का उपाय है।

इसप्रकार यह पाँचवी सुखशक्ति पूर्ण हुई। **(क्रमशः)**

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की वार्षिक -

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 29 दिसम्बर 2019 से 11 जनवरी 2020 तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

उद्घाटन सभा के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित बाहुबलीजी भोसगे, पण्डित भरतेशजी भोसगे, पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने, संचालन दुर्लभ जैन, विनय जैन ने एवं स्वागत भाषण जिनकुमारजी शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

सभी प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार है -

(1) अनिवार्य भाषण प्रतियोगिता - दिनांक 30 दिसम्बर को प्रात:काल आयोजित इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग से मयंक जैन फुटेरा ने एवं शास्त्री वर्ग से अतिशय चौरई ने स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का विषय उपाध्याय वर्ग हेतु 'शाकाहार : श्रेष्ठ आहार' एवं शास्त्री वर्ग हेतु 'वर्तमानकालीन समस्याएं और जैनधर्म' था। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे। निर्णायक डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया व साकेतजी जैन थे। संचालन अरिहंत जैन, भूपेन्द्र जैन ने किया।

(2) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग) - दिनांक 31 दिसम्बर को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में आदित्य जैन ने प्रथम एवं समर्थ जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष राजेशजी शाहगढ एवं निर्णायक सर्वज्ञजी भारिल्ल थे। संचालन सिद्धान्त शेट्टी व सचिन जैन ने किया।

(3) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग) - दिनांक 1 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में पल त्रिवेदी ने प्रथम एवं पवित्र जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष संजीवजी खड़ैरी, मुख्य अतिथि कैलाशचंदजी सेठी एवं निर्णायक गौरव जैन व पीयूष जैन उपस्थित थे। संचालन वैभव उखलकर व अंकित जैन ने किया।

(4) संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता - दिनांक 1 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में पवित्र जैन ने प्रथम एवं दुर्लभ जैन व अरविन्द जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. दयानन्दजी भार्गव थे। निर्णायक वाई. एस. रमेश, डॉ. प्रमोदजी जैन, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील थे। संचालन मयंक जैन बण्डा व मयंक जैन लखनादौन ने किया।

(5) अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता - दिनांक 2 जनवरी को प्रात: हुई इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान समर्थ जैन विदिशा एवं द्वितीय स्थान संभव जैन व समर्थ हरदा ने प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुंजा पाटनी ने की। निर्णायक प्रतीति पाटील, स्वानुभूति जैन, सर्वदर्शी भारिल्ल थे। संचालन स्वप्निल जैन व वैभव जैन ने किया।

(6) अंत्याक्षरी प्रतियोगिता - दिनांक 2 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में अमन जैन-अर्पित जैन (कैलाश पर्वत) ने प्रथम तथा सोमिल जैन-अमन खनियांधाना (चम्पापुर टीम) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष संजय जैन बड़ामलहरा एवं मुख्य अतिथि जिनकुमारजी शास्त्री थे। निर्णायक जिनेन्द्र जैन व रूपेन्द्र जैन थे। संचालन सहज जैन व सजल जैन ने किया।

(7) शलाका प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग) - दिनांक 3 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में समर्थ जैन ने प्रथम एवं राहुल जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं मुख्य अतिथि नीशूजी शास्त्री थे। निर्णायक के रूप में अमन जैन व श्री डी.के. जैन उपस्थित थे। संचालन आयुष जैन गौरझामर व सम्मेद खोत ने किया।

(8) काव्यपाठ प्रतियोगिता - दिनांक 3 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में समकित जैन प्रथम एवं आप्त जैन द्वितीय स्थान पर रहे। अध्यक्ष श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं निर्णायक श्री अखिलजी बंसल व अनिलजी जैन थे। संचालन संयम जैन व निखिल जैन ने किया।

(9) श्लोक पाठ प्रतियोगिता - दिनांक 4 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग से चेतन जैन एवं शास्त्री वर्ग से पवित्र जैन ने स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील एवं निर्णायक नयन जैन व जिनकुमार जैन थे। संचालन समर्थ जैन व रवीन्द्र जैन ने किया।

(10) भजन प्रतियोगिता - दिनांक 4 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में दर्शन सिंघई ने प्रथम एवं शिवराज स्वामी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ज्योति जैन ने की। निर्णायक राजकुमार सिंघी, परिणति पाटील, प्रतीति पाटील थे। संचालन संयम देशमाने व आयुष जैन पिपरिया ने किया।

(11) कथाविद् प्रतियोगिता - दिनांक 5 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में विनय जैन ने प्रथम एवं समर्थ जैन विदिशा व आदित्य जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, मुख्य अतिथि श्री शांतिलालजी गंगवाल व श्रीमती कमला भारिल्ल एवं निर्णायक श्री संजयजी सेठी व जिनकुमारजी शास्त्री थे। संचालन अभय जैन व सम्यक् सिंघई ने किया।

(12) नाट्य प्रतियोगिता - दिनांक 10 जनवरी को सायंकाल आयोजित इस प्रतियोगिता

में "You kill water, water will kill you" ने प्रथम एवं 'घर-घर की कहानी' व 'एक मुलाकात' ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष निशांतजी एवं मुख्य अतिथि चिन्मयजी जैन एवं परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे। निर्णायक के रूप में सर्वज्ञजी भारिल्ल उपस्थित थे। संचालन हरीश जैन ने किया।

(13) शोधपत्र वाचन प्रतियोगिता – दिनांक 11 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में पवित्र जैन ने प्रथम एवं जितेन्द्र जैन व अमन जैन आरोन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की। निर्णायक के रूप में चर्चित जैन अच्युतकांतजी जैन व अनिलजी जैन उपस्थित थे। संचालन दुर्लभ जैन व नितिन जैन ने किया।

(14) शलाका प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग) – दिनांक 11 जनवरी को सायंकाल हुई इस प्रतियोगिता में समर्थ जैन ने प्रथम एवं स्वप्निल जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन ने की। निर्णायक के रूप में प्रमोदजी शास्त्री व अनेकान्तजी भारिल्ल उपस्थित थे। संचालन दीपम खतौली व चेतन खड़ैरी ने किया।

(15) चित्रकला प्रतियोगिता – दिनांक 30 दिसम्बर को दोपहर में हुई इस प्रतियोगिता में अर्पित जैन भिण्ड ने प्रथम, प्रजल जैन ने द्वितीय एवं विनय जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक सर्वदर्शी भारिल्ल व नीशूजी शास्त्री थे। संचालन प्रजल जैन व आयुष जैन ने किया।

(16) निबन्ध प्रतियोगिता – दिनांक 5 जनवरी को दोपहर में आयोजित इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग में प्रथम स्थान चेतन जैन व द्वितीय स्थान दीपक जैन ने प्राप्त किया। शास्त्री वर्ग में अर्पित जैन ने प्रथम व आप्त अनुशील ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

खेलकूद प्रतियोगिताएं

इसी क्रम में दिनांक 24 दिसम्बर 2019 से 9 जनवरी 2020 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' गीत के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ.भारिल्ल आदि सभी स्थानीय विद्वत्गण व अध्यापकगण उपस्थित थे। दिनांक 6 जनवरी को रतनदीप क्रिकेट स्टेडियम जगतपुरा में श्री प्रदीपजी-आशीषजी जैन परिवार बापूनगर द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन हुआ।

क्रिकेट प्रतियोगिता में विजेता आचार्य अमृतचंद्र टीम एवं उपविजेता जय गोमटेश टीम रही। **बॉलीवॉल** में प्रथम स्थान पर जयगोमटेश-I तथा द्वितीय स्थान पर जयगोमटेश-II टीम रही। **कबड्डी** में प्रथम स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ एवं द्वितीय स्थान पर उपाध्याय कनिष्ठ रही। **स्लो साइकिल** में प्रथम स्थान पर ममित जैन तथा द्वितीय स्थान पर हर्षित जैन रहे। **तस्तरी फेंक** में प्रथम स्थान पर आकाश हलाज एवं द्वितीय स्थान पर धनुषकुमार रहे। **तीन पैर दौड़** में प्रथम स्थान पर अचिन्त्य व आप्तअनुशील जैन एवं द्वितीय स्थान पर हितंकर व शाश्वत जैन रहे। **कैरम (एकल)** में प्रथम स्थान पर अक्षय जैन एवं द्वितीय स्थान पर हर्षित

खनियांधाना रहे। **कैरम (युगल)** में प्रथम स्थान पर चेतन-ममित एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन-आयुष रहे। **शतरंज** में अभिषेक देवराहा व अक्षय दलपतपुर विजेता रहे। **बैडमिंटन (एकल)** में प्रथम स्थान पर हितंकर जैन एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन जी. रहे। **बैडमिंटन (युगल)** में प्रथम स्थान पर हितंकर व संवेग जैन एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन व आयुष पिपरिया रहे। **दौड़ रिले (4X100)** में प्रथम स्थान पर जगदीशन, आयुष, चेतनप्रकाश व अक्षत तथा द्वितीय स्थान पर सिद्धांत चौगुले, सम्मेद पाटील, सोहम शाह, आकाश हीरापुर की टीम रही। **दौड़ (100 मीटर)** में प्रथम स्थान आयुष एवं द्वितीय स्थान धनुषकुमार, **दौड़ (200 मीटर)** में प्रथम स्थान जगदीशन एवं द्वितीय स्थान सिद्धांत चौगुले, **दौड़ (400 मीटर)** में प्रथम स्थान जगदीशन ने एवं द्वितीय स्थान धनुषकुमार ने प्राप्त किया। **ऊंचीकूद** में प्रथम स्थान आयुष एवं द्वितीय स्थान जगदीशन ने प्राप्त किया। **रस्सीकूद** में प्रथम स्थान हितंकर एवं द्वितीय स्थान ममित ने प्राप्त किया। **लम्बीकूद** में प्रथम स्थान जगदीशन एवं द्वितीय स्थान सिद्धांत चौगुले ने प्राप्त किया। **गोला फेंक** में प्रथम स्थान आकाश हलाज एवं द्वितीय स्थान आयुष ने प्राप्त किया।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ●

डॉ. भारिल्ल के विशेष प्रवचन

चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अविरत सम्यग्दृष्टि श्रावक का अन्तर्बाह्य जीवन कैसा होता है - इस विषय पर प्रवचनों में **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** अनेक बार चर्चा करते रहे हैं और इस संबंध में लिखने की भावना भी व्यक्त करते रहे। उसी के फलस्वरूप '**भरत का अन्तर्द्वन्द्व**' महाकाव्य का शुभारम्भ होकर चार अध्याय लिखे जा चुके हैं। इन पर आपके विशेष प्रवचन दिनांक 15 दिसम्बर, 22 दिसम्बर को संपन्न विधानों के अवसर पर एवं दिनांक 25 से 27 दिसम्बर तक प्रशिक्षण शिविर प्रशिक्षक कार्यशाला के अवसर पर सम्पन्न हुए। टोडरमल महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों के अतिरिक्त अनेक साधर्मियों ने इसका लाभ प्राप्त किया।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 23 दिसम्बर को '**जीव जीता कर्म हारा**' विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान अंकित जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं द्वितीय स्थान ज्ञायक जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण कपिल जैन बमहोरी (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के रवीन्द्र जैन व विनय जैन ने किया। आभार प्रदर्शन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

76वाँ धार्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : यहाँ सैदापेट दिगम्बर जैन मन्दिर में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र पौन्नूरमलै के तत्त्वावधान में शीतकालीन अवकाश के दौरान दिनांक 27 से 29 दिसम्बर तक 76वें धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री, पण्डित जयराजजी शास्त्री, पण्डित रामदासजी शास्त्री, पण्डित बसंतजी शास्त्री, पण्डित श्रीकांतजी शास्त्री, पण्डित महावीरजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। श्री अभिनन्दनजी जैन ने पूजन विधियों के बारे में जानकारी दी। शिविर में पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन, ऑनलाइन क्विज आदि के माध्यम से शिविरार्थियों को पढाया गया।

शिविर में बाल कक्षाएं एवं दो प्रकार की प्रौढ कक्षाओं का आयोजन हुआ। प्रौढ कक्षाओं में नयचक्र एवं गुणस्थान विवेचन की कक्षाएं ली गईं।

शिविर के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री चिन्नदुरै इंजीनियर एवं समापन समारोह में डॉ. कनक अजितदास जैन व श्री भूपालन जैन इंजीनियर पधारे। शिविर के अन्तिम दिन परीक्षा ली गई, जिसका पुरस्कार वितरण श्री भूपेन्द्रजी भायाणी परिवार द्वारा किया गया। शिविर को सफल बनाने में स्थानीय ट्रस्टी श्री अप्पांडैराजनजी जैन ऑडिटर, श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, श्री हरिजी जैन आदि ने तन-मन-धन से सहयोग किया।

सिद्धक्षेत्र तारंगाजी में शिविर

तारंगा-मेहसाणा (गुज.) : यहाँ सिद्धक्षेत्र तारंगाजी पर चैतन्य युवा फोरम के तत्त्वावधान में दिनांक 27 से 29 दिसम्बर 2019 तक प्रथम युवा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई के रोचक शैली में आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर पूजन एवं भक्ति संबंधी सभी कार्य पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम द्वारा संपन्न हुए। शिविर में मुम्बई, हिम्मतनगर, तलोद आदि अनेक नगरों तथा अहमदाबाद के विविध उपनगरों से पधारे 15 से 35 वर्ष की आयु के लगभग 375 युवाओं ने विशेष रूप से धर्मलाभ लिया। कक्षाएं प्रोजेक्टर पर ली गईं। कक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पूजन-भक्ति आदि सभी आयोजन विशेषरूप से युवाओं को लक्ष्य में रखकर ही तैयार किए गए थे। अन्तिम दिन सामूहिक तीर्थवन्दना का कार्यक्रम रखा गया। ज्ञातव्य है कि सभी युवाओं ने इन्टरनेट, मोबाइल फोन से दूर रहकर धर्मलाभ लिया।

शिविर की सफलता में समाज के प्रमुख श्री सुभाषभाई कोटडिया, मंत्री श्री मुकेशभाई, श्री मितेशभाई, शिविर के चेयरमैन श्री रिन्केशभाई, श्री निश्चयभाई, श्री शारलीनभाई की सक्रिय भूमिका रही। शिविर के प्रायोजक (Sponcer) श्री राहुल नवीनचन्द्र मेहता मुम्बई एवं नैवेद्य नीलेशभाई शाह मुम्बई थे। **– दर्शिल जैन, साजन गांधी**

त्रिदिवसीय चरणानुयोग शिविर संपन्न

पिड़ावा (राज.) : यहाँ आदिनाथ जिनालय एवं वीतराग-विज्ञान चैत्यालय में दिनांक 24 से 27 दिसम्बर तक चरणानुयोग शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा प्रात: भावपाहुड एवं सायंकाल नियमसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त दोपहर में 'अष्टमूल गुणों के पालन व पाँच अभक्ष्यों के त्याग से स्वास्थ्य रक्षा' विषय पर प्रोजेक्टर के माध्यम से विशेष सत्र का आयोजन हुआ। शिविर का आयोजन श्री धनसिंहजी, कैलाशसिंहजी व प्रकाशसिंहजी जैन द्वारा किया गया, जिसमें लगभग 250 साधर्मियों ने लाभ लिया। **– धनसिंह जैन, पिड़ावा**

ज्ञानगोष्ठी संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण-कुलभूषण छात्रावास की सोलहवीं ज्ञानगोष्ठी दिनांक 5 जनवरी को '**सदाचार : एक अनुशीलन**' विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद एवं मुख्य अतिथि पण्डित प्रदीपजी माद्रप औरंगाबाद थे। निर्णायक के रूप में श्री कुलभूषणजी बण्ड औरंगाबाद, श्री सागरजी गाडेकर औरंगाबाद उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान सिद्धेश जैन सावदा जलगांव ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण प्रतीक जैन अम्बड एवं संचालन अनुराग जैन औरंगाबाद व वेदांत जैन वाडेगांव ने किया। अभार प्रदर्शन कुलभूषणजी जैन ने किया।

दिनांक 11 जनवरी को '**प्राचीन कवियों के भजन**' विषय पर गोष्ठी संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री विजयकुमारजी जैन (हाथरस वाले) मुम्बई एवं मुख्य अतिथि श्री विजयभाई बोटादरा घाटकोपर व श्री नेमचंदजी कांदीवली थे। निर्णायक के रूप में श्री रितेशजी जैन मुम्बई व श्री हिमांशुजी जैन मुम्बई उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान वेदांत जैन वाडेगांव अकोला ने प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण अक्षद जैन बुलढाणा एवं संचालन ऋषिकेश जैन वल्लीवडे कोल्हापुर व पार्श्व जैन वागपी कोल्हापुर ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शुभमजी शास्त्री ने किया।

सप्तम वार्षिकोत्सव संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री सीमंधर दिगम्बर जैन मन्दिर में सप्तम वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा रचित प्रवचनसार मंडल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अरविन्दजी शास्त्री का भी लाभ मिला। इस प्रसंग पर लगभग 200 से अधिक साधर्मियों की उपस्थिति रही। विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी द्वारा संपन्न हुए।

समयसार विद्यानिकेतन के बढते चरण...

ज्ञानगोष्ठियाँ संपन्न

आत्मायतन-ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री समयसार विद्यानिकेतन में रविवारीय ज्ञानगोष्ठी के अन्तर्गत 'तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री, मुख्य अतिथि डॉ. नितिनजी जैन एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. रीना जैन थे। सभी विद्यार्थियों ने जैनदर्शन के विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का मंगलाचरण आदि जैन पाली ने, संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित प्रदीपजी शास्त्री ने किया।

अठारहवीं रविवारीय ज्ञानगोष्ठी के अन्तर्गत कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई से प्रकाशित 'अध्यात्म संजीवनी' पर आधारित भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राकेशजी नायक (अध्यक्ष-राज्य शिक्षक कांग्रेस, म.प्र.), मुख्य अतिथि श्री राजीवजी पाठक (कार्याध्यक्ष-रा.शि.कां. म.प्र.) एवं विशिष्ट अतिथि श्री हिम्मतसिंहजी यादव थे। मुख्य वक्ता के रूप में श्री कुलदीपसिंह राजपूत (जिलाध्यक्ष-रा.शि.कां., ग्वालियर) उपस्थित थे। निर्णायक के रूप में श्री पंकजजी पाठक (ए.डी.पी.सी., ग्वालियर) एवं श्री दीपकजी शर्मा (संगठन मंत्री-रा.शि.कां., म.प्र.) उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में श्री जे.पी.व्यास (जिला महामंत्री-रा.शि.कां.ग्वालियर), श्री अमरबन्धु त्रिपाठी, श्री संतकुमारजी, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री (निर्देशक-समयसार विद्यानिकेतन) एवं श्रीमती अंजलि जैन (प्राचार्या-समयसार विद्यानिकेतन) उपस्थित रहे।

अर्हं पाठशाला (ऑनलाईन) प्रवेश प्रारम्भ

श्री वीतराग-विज्ञान मुक्त विद्यापीठ द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला ऑनलाईन कक्षाएं हैं, जिसमें आप जूम एप द्वारा घर बैठे जैनधर्म का अध्ययन कर सकते हैं। बेसिक, इंटरमीडिएट व हायर वर्ग में विभाजित ये कक्षाएं हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल, अंग्रेजी आदि छः भाषाओं में संचालित है। सप्ताह में दो दिन सचित्र व आकर्षक ppt द्वारा कक्षा एवं प्रतिमाह विद्वानों द्वारा विशेष विषय पर दो सेमिनार तथा अन्य रोचक एक्टिविटीज होती हैं। ये कक्षाएं हर आयुवर्ग के लोगों को आकर्षित कर रही हैं। अर्हं पाठशाला से जुड़ने हेतु अभी संपर्क करें - 8058890377

एडमिशन फार्म की लिंक प्राप्त करने हेतु उक्त नम्बर पर वाट्सएप करें।

अंतर में दृष्टि लगाना ही आत्मा का आहार है। श्रद्धा-ज्ञान का बारम्बार अभ्यास करना ही आत्मा का आहार है। 821. **- द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ 188**

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर में स्थित कहान सोसायटी में बन रहे फ्लेटों का दृश्य

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में बन रही आंतरिक व बाह्य रचना का मॉडल

प्रकाशन तिथि : 24 नवम्बर 2019

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**